खेती री बातां

वर्ष–16 अंक–10 मासिक पत्रिका आर.एन.आई – 70296/98 5 अक्टूबर 2013 वार्षिक शुल्क –12 रुपये

राज्य स्तरीय कृषक सम्मान समारोह – 2013

पानी की बचत को जन आंदोलन बनाएं – गहलोत

जयपुर, 26 सितम्बर। राज्य कृषि प्रबन्ध संस्थान, दुर्गापुरा में आत्मा योजना के तहत कृषि एवं सम्बन्धित क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले किसानों को सम्मानित करने के लिये राज्य स्तरीय कृषक सम्मान समारोह में 496 प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया गया। इस समारोह में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत एवं कृषि मंत्री हरजीराम बुरड़क ने राज्य स्तर पर 2 कृषकों को 50–50 हजार, जिला स्तर पर 64 कृषकों को 25–25 हजार (कृषक सूची पृष्ठ 3 पर) तथा पंचायत समिति स्तर पर 430 कृषकों को 10–10 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि के चैक तथा प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।

कृषि प्रदर्शनी का अवलोकन

इससे पहले मुख्यमंत्री ने परिसर में नये **ऑडोटोरियम** का विधिवत लोकार्पण किया तथा परिसर में आयोजित प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया। साथ ही कृषि मंत्री हरजीराम बुरड़क व राजस्थान राज्य भण्डार व्यवस्था निगम के सी.एम.डी., डी.बी. गुप्ता ने मुख्यमंत्री को लाभांश का 1.18 करोड़ रुपये का चैक भेंट किया।

मुख्यमंत्री ने किसानों का आह्वान किया कि अब समय आ गया है जब पानी की कमी के कारण हमें खेती में बून्द–बून्द एवं फव्वारा सिंचाई को अपनाने के साथ ही पानी के महत्व एवं बचत को जन–जन तक पहुंचाने के लिये इसे जन आंदोलन बनाना चाहिए। गहलोत ने कहा कि प्रदेश में 28400 हैक्टर क्षेत्र में बून्द–बून्द सिंचाई तथा 70 हजार हैक्टर क्षेत्र में फव्वारा खेती हो रही है। राजस्थान फव्वारा सिंचाई में देश में प्रथम है। जरूरत इस बात की है कि फसल को उसकी आवश्यकता के अनुसार ही पानी दिया जाये ताकि फसल की गुणवत्ता बढ़ने के साथ ही पानी की प्रत्येक बून्द का समुचित उपयोग हो सके।

उन्होंने प्रगतिशील किसानों का आह्वान किया कि वे अपने साथी किसानों को पानी के महत्व को समझायें और कम पानी में अधिक उत्पादन देने वाली फसलों को अपनाने के लिये प्रेरित करें। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में कृषि को प्राथमिकता देने की वजह से ही राजस्थान जैसे मरूस्थलीय राज्य को राष्ट्रीय स्तर पर सर्वाधिक दलहन एवं खाद्यान्न उत्पादन व उत्पादकता के लिये प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह एवं राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी के हाथों लगातार 2 वर्षों से पुरस्कार मिले हैं। इसका श्रेय प्रदेश के किसानों को ही जाता है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने कृषि को बढ़ावा देने के लिये ही नई कृषि नीति लागू की है।

गहलोत ने कहा कि अब तक राज्य में कृषि पर योजना का 6 प्रतिशत व्यय किया जाता था। जिसे बढ़ाकर अब 10 प्रतिशत व्यय कृषि आधारित गतिविधियों पर किये जाने की मंशा है। हमारा निरन्तर प्रयास रहेगा कि प्रदेश में कृषि एवं पशुपालन मजबूत हो और उसी के अनुरूप योजनाएं बनाई जायें। यह क्षेत्र जितना मजबूत होगा, प्रदेश भी उतना ही मजबूत होगा। उन्होंने कहा कि बिजली की बढ़ी दरों का भार सरकार द्वारा वहन करते हुए पांच हजार करोड़ रुपये बिजली कम्पनियों को दिये गये ताकि किसानों पर इसका भार नहीं पड़े।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राजस्थान और इजराइल की परिस्थितियां समान होने की वजह से वहां कृषि एवं जल संरक्षण के लिये किये जा रहे कार्यों को हमने देखा है तथा अगली बार 10 प्रगतिशील किसानों सहित 30 किसानों का एक प्रतिनिधिमण्डल इजराइल भिजवाया जायेगा। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने प्रदेश की ''राज्य कृषि नीति'' पुस्तक का लोकार्पण किया। कार्यक्रम में कृषि मंत्री हरजीराम बुड़रक ने कहा कि राज्य सरकार ने किसानों को सम्मानित करने की शुरूआत के साथ ही खेती और

..... शेष पृष्ठ 4 पर

खजूर उत्कृष्टता उत्पादन केन्द्र का शिलान्यास

जैसलमेर, 2 सितम्बर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने जैसलमेर से लगभग 30 किलोमीटर दूर सगरा–भोजका स्थित राजकीय खजूर पौध प्रदर्शन फार्म पर 1 करोड़ 52 लाख रुपये की लागत से निर्मित ''खजूर उत्कृष्टता उत्पादन केन्द्र'' का भूमि पूजन कर शिलान्यास किया तथा शिलान्यास पट्टिका का अनावरण किया। इस अवसर पर राज्य ऊर्जा मंत्री डॉ. जितेन्द्र सिंह, पूर्व मंत्री डॉ. चन्द्रभान, सहित अन्य विशिष्ट अतिथिगण उपस्थित थे। मुख्यमंत्री ने कहा कि आने वाले समय में खजूर के उत्पादन को देखते हुए जोधपुर के बासनी में विश्व स्तरीय ''टिश्यू कल्चर लेब'' की स्थापना की गई है।

नवीन विद्युत कनेक्शन के साथ सूक्ष्म सिंचाई संयत्र अपनाने पर 20 प्रतिशत अतिरिक्त अनुदान का प्रावधान किया गया है। उन्होंने ने कहा कि अब तक लगभग 500 हैक्टर क्षेत्र में किसानों के खेतों पर खजूर के बगीचे लगवाए जा चुके हैं। इजराइल आधारित कृषि तकनीकी से कृषकों को खजूर उत्पादन की गुणवत्ता एवं आमदनी में वृद्धि होगी।

प्रथम राज्य स्तरीय प्रगतिशील पशुपालन सम्मान समारोह

जयपुर, 31 अगस्त। बिड़ला सभागार में प्रथम राज्य स्तरीय प्रगतिशील पशुपालन सम्मान समारोह में राज्य के कुल 237 पशुपालकों को राज्य, जिला एवं पंचायत समिति स्तर पर पुरस्कृत किया गया। राज्य स्तर पर झुंझुनूं जिले के प्रगतिशील पशुपालक सुरेन्द्र सिंह तथा जैसलमेर जिले के मानसिंह राठौड़ को 50–50 हजार रुपये के चैक प्रदान किये गये। मुख्य अतिथि के रूप में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने पशुपालन क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान करने वाली महिलाओं को भी सम्मानित किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने पशुधन के लिए मुख्यमंत्री पशुधन निःशुल्क दवा योजना की शुरूआत की जो देश में किसी प्रदेश में नहीं है। मुख्यमंत्री दुग्ध उत्पादन संबल योजना के तहत पशुपालकों को 2 रुपये प्रति लीटर की दर से अनुदान दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि मोबाइल यूनिट्स के जरिए पशुधन के लिए चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएं शीघ्र उपलब्ध कराई जायेगी। समारोह में कृषि मंत्री हरजीराम बुरड़क ने पशुपालन से संबंधित योजनाओं की सफलता का जिक्र करते हुए कहा कि नवीन योजनाओं से मूक पशुओं एवं गरीब पशुपालकों का भला हुआ है। उन्होंने कहा कि पशु नस्ल सुधार कार्यक्रम में प्रदेश ने राष्ट्रीय स्तर पर उल्लेखनीय सफलता अर्जित की है।

E mail : kheti_ri_batan@yahoo.co.in

इस अंक में....

www.krishi.rajasthan.gov.in

▶ खेती के उन्नत तरीके अपनाएं : भरपूर फसल व मुनाफा पाऐं..... पृष्ठ 2

▶ इस माह के कृषि कार्य
▶ परख
▶ तारामीरा की उन्नत खेती कर .....
▶ बीज रथ रवाना..... पृष्ठ 3

▶ बागवानी में पादप नियंत्रकों का उपयोग
▶ प्रमाणित बीज की विक्रय दरें
पृष्ठ 4

दूरभाष – 0141–5116240, 2227365/354

खेती के उन्नत तरीके अपनाएं : भरपूर फसल व मुनाफा पाएं

फसल	किस्म	पकाव अवधि (दिनों में)	उपज (क्वि. प्रति है.)	बीज दर (किलो प्रति है.)	बुवाई पूर्व उर्वरक (किलो प्रति है.)		खडी फसल में यूरिया (किलो प्रति है.)	कतारों के बीच दूरी (सेमी.)	विशेष विवरण
					विकल्प–1 (डीएपी + यूरिया)	विकल्प–2 (एसएसपी +यूरिया)			
गेहूँ	राज मोल्या रोधक–1	120–125	40–45	100	80+70	220+100	100	20–22	सामान्य बुवाई, मोल्या रोधक किस्म।
	पी.बी.डब्ल्यू 343	140–150	50–60					22–23	सामान्य बुवाई, अधिक उर्वरता क्षेत्र।
	राज.3077	100–105	45–50					20–22	सामान्य,पछेती, लवणीय क्षेत्र।
	राज.4037	120–130	55–60					20–22	सामान्यबुवाई, गर्म जलवायु सहनशील।
	पी.बी.डब्ल्यू 550	128–135	45–58					22–23	सामान्य बुवाई।
	राज.3777	105–110	25–30	125				20–23	पछेती बुवाई (15 जनवरी तक)।
	राज.3765	117–122	45–50					20–23	पछेती बुवाई, रोली रोधक।
	पी.बी.डब्ल्यू 373	130–135	40–45					22–23	पछेती बुवाई, रोली रोधक।
	राज.4083	115–118	35–40					20–22	पछेती बुवाई, रोली रोधक।
	राज.4120	117–124	48–58	100				20–22	सामान्य बुवाई,यूजी 99 रोली रोधक।
	डब्ल्यू.एच 1080	127–133	32–34	125				20–22	बारानी व कम पानी वाले क्षेत्र, रोली रोधक।
	राज 4079	115–120	47–50	100				30–32	गर्म तापक्रम सहनशीलता, रोली रोधक।
जौ	आर.डी.2035	115–125	65–75	100	45+50	125+65	65	23–25	सिंचित क्षेत्र,सामान्य बुवाई।
	आर.डी.2052	120–125	45–65						मोल्या ग्रस्त व सामान्य बुवाई।
	आर.डी.2503	120–125	45–55						सिंचित क्षेत्र,सामान्य बुवाई।
	आर.डी.2508	118–120	30–35						असिंचित क्षेत्र,देर से बुवाई।
	आर.डी.2552	125–130	50–60						सिंचित,सामान्य बुवाई,क्षारीय,लवणीय।
	आर.डी.2592	115–125	45–50						सिंचित,सामान्य बुवाई।
	आर.डी.2624	115–120	28–30						असिंचित,सामान्य बुवाई,मोल्या रोधी।
	आर.डी.2660	115–120	24–25						असिंचित,सामान्य बुवाई।
	आर.डी.2715	120–125	26–28						सिंचित ,हराचारा (50–55दिन)।
चना	जी.एन.जी.1581 (गणगौर)	130–135	22–24	70–80	80+10	250+45	–	30–32	झुलसा, जड़गलन रोधी, असिंचित।
	जी.एन.जी.1488 (संगम)	130–135	15–20						देर से बुवाई (दिसम्बर प्रथम सप्ताह), झुलसा, जड़गलन रोधी।
	दाहोद यलो	90–105	15–20						पीले मोटे दानों वाली किस्म।
	आर.एस.जी 888 (अनुभव)	130–135	20–25						उखटा,जड़गलन, सूखा सहनशील।
	सी.एस.जे.डी 884 (आकाश)	130–135	20–25						असिंचित, बारानी, उखटा, जड़गलन
	आर.एस.जी. 974 (अभिलाषा)	125–130	20–25						उखटा, जड़गलन, पाला सहनशील, पछेती, बारानी।
	आर.एस.जी.973 (आभा)	125–130	15–20						बारानी क्षेत्र,अधिक सूखा सहनशील।
	आर.एस.जी.945 (आशा)	125–130	20–25						पछेती,उखटा व सूत्रकृमि प्रतिरोधी।
	आर.एस.जी.के.6 (आसार)	135–140	15–20	100					काबुली चना,जड़गलन,सूत्रकृमि प्रतिरोधी।
	आर.एस.जी.896 (अपर्ण)	125–130	15–20	70–80					उखटा, जड़गलन, बी.जी.एम. स्टन्ट वाइरस प्रतिरोधी।
	आर.एस.जी.991 (अपर्णा)	135–140	20–22						हरे चने की किस्म,जड़गलन, उखटा रोग प्रतिरोधी।
सरसों	आर जी .एन.145	120–141	14–17	4–5	70+40	190+65	65	30–35	पछेती बुवाई (नवम्बर के अंतिम सप्ताह से दिसम्बर प्रथम सप्ताह)
	टी.59 (वरूणा)	125–140	15–18						सिंचित एवं असिंचित क्षेत्र।
	पूसा बोल्ड	130–140	12–15						मोटे दाने की किस्म।
	आर.एच.30	130–135	12–15						मिश्रित खेती,देर से बुवाई।
	लक्ष्मी (आर.एच.8812)	140–150	20–22						मोटे दाने,सिंचित क्षेत्र।
	पी.आर.45 (क्रांति)	125–135	15–18						पाला,तुलासिता व सफेद रोली रोधी।
	बायो 902 (पूसा जय किसान)	130–140	18–20						तुलासिता, सफेद रोली व मुरझान रोधी।
	पी.सी.आर 7 (रजत)	130–140	15–20						बारानी क्षेत्र के लिए।
	आर.एन.505	125	14–15						पछेती,तना सड़न व पाला सहनशील।
	आर.एच.9304 (वसुन्धरा)	130–135	20–21						सफेद रोली रोधी।
	आर.जी.एन.73	125–130	22–25						सफेदरोली,पत्तीधब्बा रोग, पाला रोधी।
मेथी	आर.एम.टी.1	140–150	15–20	20–25	90+10	250+45	45	30	जड़गलन,छाछ्या रोधी।
	आर.एम.टी.143	140–150	15–20						छाछ्या रोधी व भारी मिट्टी क्षेत्र।
	आर.एम.टी.305	120–130	18–20						छाछ्या रोग रोधी।
जीरा	आर.जेड.19	120–125	10–12	12–15	45+15	125+35	35	22.5–25	उखटा, छाछ्या व झुलसा रोधी।
	आर.जेड.209	120–125	10–12						छाछ्या रोधी किस्म।
	आर.जेड.223	120–130	10–12						उखटा व झुलसा रोधी।
	गुजरात जीरा.2	100–110	10–12						सामान्य सिंचित क्षेत्र।
	जी.सी.4	120	6–7						उखटा, छाछ्या व झुलसा रोधी।
धनियाँ	आर.सी.आर.41	140–145	10–12	15–20	65+40	190+65	65	30	तना सूजन व उखटा रोधी।
	आर.सी.आर.436	110–120	15–16						छाछ्या व लोंगिया रोग मध्यम प्रतिरोधी।
	आर.सी.आर.684	120–125	18–20						उखटा व छाछ्या रोधी।
	आर.सी.आर.480	115–118	18–20						उखटा व छाछ्या रोधी।
	सी.एस.6	120–125	15–18						मोटे दाने, सिंचित एवं असिंचित क्षेत्र।

अच्छी उपज के लियेः–

★बीज जनित रोगों से बचाव के लिये 4–8 ग्राम ट्राइकोडर्मा या 3 ग्राम थाइरम या 2 ग्राम कार्बेण्डेजिम या 2 ग्राम मैन्कोजेब दवा प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार करें। बीज उपचार हेतु प्रत्येक ग्राम पंचायत में उपलब्ध बीज उपचार ड्रम काम में लेवें।

★अनाज वाली फसलों में एजेटोबैक्टर, दलहनी फसलों में राइजोबियम व सभी फसलों में पी.एस.बी. कल्चर के 3 पैकेट कल्चर प्रति हैक्टर की दर से बीज उपचार करें। इसके बाद जैव फफूंदनाशी ट्राइकोडर्मा से उपचार करें।

★मिट्टी की जाँच करवा कर उर्वरक देवें। असिंचित फसल में उर्वरक की ऊपर दी गई मात्रा की आधी मात्रा काम में लेवें।

★तिलहनी व दलहनी फसलों में अन्तिम जुताई के समय 250 किलोग्राम जिप्सम प्रति हैक्टर डालें।

इस माह के कृषि कार्य

फसलोत्पादन

★ **चने** के बीज को 1 ग्राम कार्बेण्डेजिम अथवा 2 ग्राम थाइरम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करने के बाद राइजोबियम व पी.एस.बी. कल्चर (3 + 3 पैकेट प्रति हैक्टर की दर) से उपचारित करके बुवाई करें।

★ **जौ** की बुवाई मध्य अक्टूबर से नवम्बर तक करें।

★ **सरसों** की फसल को सफेद रोली रोग से बचाने के लिए 6 ग्राम मैटेलेक्जिल (एप्रोन 35 एस.डी.) नामक दवा से प्रति किलो बीज को उपचारित कर बोयें।

बागवानी

★ **आम** के पौधे में इस माह में मिलीबग कीट के आक्रमण की संभावना रहती है। अतः शिशु कीटों को पेड़ों पर चढ़ने से रोकने के लिए एल्काथिन (400 गेज) की 30 सेमी चौड़ी पट्टी जमीन से 2 फुट ऊंचाई पर तने के चारों तरफ लगायें एवं इस पर ग्रीस का लेप करें। यदि पेड़ों पर मिलीबग चढ़ गये हैं तो डाइमिथोएट 30 ई.सी. दवा 1.5 मिली या एसिफेट 75 डब्ल्यू.पी. 2 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

★ **बेर** के फलों का आकार मटर के दाने के समान होने पर डायमिथोएट 30 ई.सी. 1 मिली. दवा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। इस माह यूरिया 600 ग्राम प्रति पौधे के हिसाब से डालकर सिंचाई करें।

सब्जियाँ

★ **फूल गोभी व पत्ता गोभी** की पछेती किस्मों की तैयार पौध का खेत में 60 x 45 सेमी की दूरी पर रोपण करें।

★ **बैंगन** की बसंतकालीन फसल हेतु नर्सरी में तैयार पौध का खेत में 60 x 60 सेन्टीमीटर की दूरी पर रोपण करें।

★ **टमाटर** की सर्दी की फसल हेतु तैयार

पौध का खेत में 75 x 75 सेमी की दूरी पर रोपण करें। रोपण पूर्व खेत की तैयारी के साथ सड़ी गोबर की खाद 150 क्विंटल, नत्रजन 60 किलो, फॉस्फोरस 80 किलो व पोटाश 60 किलो प्रति हैक्टर की दर से मिलायें।

★ **गाजर** की नारंगी रंग की किस्मों जैसे नेन्टिस या पूसा मंदागिनी की बुवाई करें। बीज दर 5–6 किलो प्रति हैक्टर रखें।

★ **मूली** की बुवाई हेतु जापानीज व्हाईट उन्नत किस्म है। बीज दर 10–12 किलो प्रति हैक्टर तथा कतारों के बीच 30 सेमी व पौधों के बीच 8–10 सेमी दूरी रखें।

मसाले

★ मसाला फसलों जैसे सौंफ, धनियाँ व मेथी की बुवाई करें। बुवाई से पूर्व प्रति किलो बीज को 2 ग्राम थाईरम या 4 ग्राम ट्राईकोडर्मा (जैविक नियन्त्रक) से उपचारित कर बुवाई करें।

परख

सितम्बर, 2013 के अंक में प्रकाशित आलेख में से दो प्रश्न पूछे गये थे। सही उतर भेजने वाले लॉटरी द्वारा चुने गये दो विजेता कृषकों के नाम हैं–

1. **श्री समदअली मंसूरी,**
   ग्राम–जोतायां,
   वाया–टाटोटी,
   जिला– अजमेर–305627
2. **श्री मनप्रीत सिंह,**
   पुत्र सोहन सिंह,
   ग्राम–हरिपुरा, वार्ड–8,
   तहसील–संगरिया,
   जिला–हनुमानगढ़–335063

इस माह के प्रश्न हैं –

प्र.1 राज्य स्तरीय कृषक सम्मान समारोह में जिला स्तर पर कितने किसानों को सम्मानित किया गया है ?

प्र.2 कुष्मांड कुल की सब्जियों में मादा फूलों की संख्या बढ़ाने के लिए कौन से पादप नियंत्रक का छिड़काव किया जाता है ?

तारामीरा की उन्नत खेती कर भरपूर उत्पादन पाएं

सभी क्षेत्रों में पैदा की जाने वाली इस फसल को अनुपजाऊ एवं अनुपयोगी भूमि पर भी बोया जा सकता है। इसमें तेल की मात्रा लगभग 35 प्रतिशत पायी जाती है।

उन्नत किस्में:– टी.– 27, आर.टी.एस.ए, आर.टी.एम.(नरेन्द्रतारा), आर.टी.एम.–314

भूमि का चुनाव:– तारामीरा के लिये हल्की दोमट मिट्टी अधिक उपयुक्त रहती है। अम्लीय एवं ज्यादा क्षारीय भूमि इसके लिये बिल्कुल उपयोगी नहीं है।

खेत की तैयारी एवं भूमि उपचार:– तारामीरा की खेती अधिकांशतः बारानी क्षेत्रों में, जहाँ अन्य फसल सफलता पूर्वक पैदा नहीं की जा सकती हों, वहाँ की जा सकती है। खरीफ की फसल लेने के बाद यदि नमी हो तो एक हल्की जुताई करके सफलता पूर्वक इसे बोया जा सकता है। दीमक और जमीन के अन्य कीड़ों की रोकथाम के लिए बुवाई से पूर्व जुताई के समय क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलो प्रति हैक्टर खेत में बिखेर कर जुताई करनी चाहिये।

बीज की मात्रा एवं उपचार:– एक हैक्टर क्षेत्र के लिये 5 किलोग्राम बीज पर्याप्त होता है। बुवाई से पहले मैन्कोजेब दवा 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीज को उपचारित करें।

बुवाई:– बारानी क्षेत्रों में तारामीरा की बुवाई का समय मिट्टी की नमी व तापमान पर निर्भर करता है। नमी की उपलब्धता के आधार पर बुवाई 15 सितम्बर से 15 अक्टूबर तक करें। कतारों के बीच 40 सेन्टीमीटर की दूरी रखते हुए कतार में बीज बोयें।

उर्वरक:– फसल में 30 किलोग्राम नत्रजन एवं 15 किलोग्राम फॉस्फोरस प्रति हैक्टर देना चाहिये। उर्वरकों को बुवाई के समय ऊर कर देना चाहिये।

सिंचाई:– सिंचाई के साधन उपलब्ध हों तो प्रथम सिंचाई 40–50 दिन में फूल आने से पहले करें। तत्पश्चात आवश्यकता पड़ने पर दूसरी सिंचाई दाना बनते समय करें।

निराई–गुड़ाई:– फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए बुवाई के 20–25 दिन बाद अनावश्यक पौधों को निकालकर पौधे से पौधे की दूरी 8–10 सेन्टीमीटर कर दें।

फसल–संरक्षण:

मोयला:– मोयला कीट लगते ही मिथाइल पैराथियान 2 प्रतिशत या कार्बेरिल 5 प्रतिशत दवा या मैलाथियान 5 प्रतिशत चूर्ण 20–25 किलो प्रति हैक्टर की दर से फसल पर भुरकाव करें अथवा मैलाथियान 50 ई.सी या डायमिथोएट 30 ई.सी दवा 875 मिलीलीटर या फार्मेथियॉन 25 ई.सी दवा एक लीटर या कार्बेरिल 50 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण 2.5 किलो या क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी दवा 600 मिलीलीटर का पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।

सफेद रोली, झुलसा व तुलासिता:– रोग के लक्षण दिखाई देते ही मैन्कोजेब 2 किलो या जाईनेब 2.5 किलो दवा का पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें। यदि प्रकोप ज्यादा हो तो यह छिड़काव 20 दिन के अन्तर पर दोहरायें।

फसल की कटाई:– फसल में जब पत्ते झड़ जायें और फलियाँ पीली पड़ने लगें तो फसल काट लेनी चाहिये अन्यथा कटाई में देरी हो जाने पर दाने खेत में झड़ जाते हैं। अनुकूल स्थितियों में 12 – 15 क्विंटल प्रति हैक्टर तक पैदावार प्राप्त की जा सकती है।

बीज रथ रवाना कर "रबी अभियान" का किया आगाज़

जयपुर, 23 सितम्बर। कृषि निदेशक श्री अनिल कुमार चपलोत ने कृषि अनुसंधान केन्द्र, दुर्गापुरा से जयपुर जिले के लिए 37 बीज रथों को रवाना कर अभियान का आगाज़ किया। किसानों के लिए प्रदेश में ''रबी अभियान'' प्रत्येक ग्राम पंचायत स्तर पर 23 सितम्बर से 18 अक्टूबर, 2013 तक चलेगा।

राज्य स्तरीय कृषक सम्मान समारोह–2013 में सम्मानित हुए कृषकों की सूची

राज्य स्तर

श्रीमती कंकू देवी पत्नी श्री रवीन्द्र कुमार
श्री चेलाराम पुत्र श्री गोकलाराम

जिला स्तर

श्री उगमाराम पुत्र श्री पांचूराम
श्री मदनसिंह पुत्र श्री बुद्दा
श्री मोहर सिंह पुत्र श्री रामदया
श्री सुनील कुमार पुत्र श्री जगदीश
श्री नारायण पुत्र श्री भेमजी पाटीदार
श्री रामप्रसाद पुत्र श्री मांगीलाल
श्री रामस्वरूप पुत्र श्री परसराम
श्री प्रेम सिंह पुत्र श्री मांगु सिंह
श्री गुरूबक्श पुत्र श्री रामनाथ
श्री पूरन सिंह पुत्र श्री धर्मसिंह जाट
श्री भीमसिंह पुत्र श्री मगनसिंह मेड़तिया
श्री रामदेव पुत्र श्री बालू कुमावत
श्री ज्ञान प्रकाश पुत्र श्री दूल्लाराम
श्री लूणाराम पुत्र श्री भैराराम
श्री श्याम बाबू पुत्र श्री जमना शंकर सोनी
श्री चन्द्रशेखर पुत्र श्री राजेन्द्र शर्मा
श्री भैरू लाल पुत्र श्री फता तेली
श्री नारायण लाल पुत्र श्री हीरा लाल धाकड़
श्री सुभाष पुत्र श्री हजारीलाल मेघवाल
श्री पुरखाराम पुत्र श्री पेमाराम जाट
श्री अशोक कुमार पुत्र श्री मांगी लाल
श्री कन्हैया लाल पुत्र श्री रामस्वरूप
श्री केशभान सिंह पुत्र श्री भगवान सिंह गुर्जर
श्री धर्मेन्द्र सिंह पुत्र श्री ओमपाल सिंह
श्री धुलजी पुत्र श्री अकई पाटीदार
श्री ईश्वर सिंह पुत्र श्री सरदार सिंह चौहान
श्री हरीराम पुत्र श्री हरखाराम
श्री जसवंत सिंह पुत्र श्री धर्मपाल
श्री जमन लाल यादव पुत्र श्री जामबन्त यादव
श्री हीरालाल पुत्र श्री बिरदीचन्द
श्री मोहम्मद नासीर पुत्र श्री जीवन खां
श्री द्वारकाराम पुत्र श्री उदाराम
श्री केहराराम पुत्र श्री मादाराम
श्री भीकाराम पुत्र श्री फुआजी
श्री प्रेमचंद पुत्र श्री मांगीलाल पाटीदार
श्री बालचन्द पुत्र श्री अमरलाल नागर
श्री रघुवीर सिंह पुत्र श्री नौरंगराम
श्री सुल्तान सिंह पुत्र श्री जुगलाल
श्री नन्द किशोर जैसलमेरिया पुत्र श्री बद्रीदास
श्री भवराराम पटेल पुत्र श्री चौथाराम
श्री शकूर खां पुत्र श्री कलुवा
श्री रामसिंह पुत्र श्री पूरन
कुमारी रिम्पी सिंह पुत्री दर्शन सिंह
श्री दुर्गा शंकर पुत्र श्री राम किशन
श्री केसाराम पुत्र श्री बोदूराम
श्री नारायणराम पुत्र श्री सुरजकरण
श्री महेन्द्र कुमार माथुर पुत्र श्री उम्मेद राज
श्री भाईलाल पटेल पुत्र श्री कृष्णा भाई पटेल
श्री यशवंत कुमार पुत्र श्री मोडीराम आंजना
श्री कुन्ज बिहारी पुत्र श्री उकारलाल आंजना
श्री हिम्मत सिंह पुत्र श्री गोविन्द सिंह
श्री मोती सिंह पुत्र श्री जैठ सिंह
श्री हरिराम मीना पुत्र श्री सोनारायण मीना
श्री हरिकृष्ण पुत्र श्री दुर्गालाल गुर्जर
श्री हरदेवसिंह पुत्र श्री गुल्लाराम जाट
श्री रामकरण पुत्र श्री जोधाराम जाट
श्री सोहन सिंह पुत्र श्री पहाड़ सिंह
श्रीमती नोनुबाई श्री दीपाराम
श्रीमती सुरेन्द्र कौर पत्नी श्री जगमोहन सिंह
श्री चेतराम पुत्र श्री परमाराम
श्री रामबिलास पुत्र श्री जमनालाल
श्री मदनलाल पुत्र श्री केसरलाल
श्री रतनलाल पुत्र श्री देवकिशन जाट
श्री हेमराज पुत्र श्री कालूलाल भट्ट

साथ ही 430 कृषकों को पंचायत समिति स्तर पर सम्मानित किया गया।

ऐसे मंगवायें "खेती री बातां"

घर बैठे वर्षभर **खेती री बातां** अखबार मंगवाने के लिये अपने नजदीकी कृषि कार्यालय में सम्पर्क करें या आहरण वितरण अधिकारी, कृषि निदेशालय कमरा नं. 250, पंत कृषि भवन, जयपुर के नाम 12/– रुपये का मनीआर्डर भेजें। **स्वयं का साफ–साफ डाक का पूरा पता, पिन कोड नंबर व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।**

डाक पं.सं. RJ/JPC/M-16/2012-14

आर.एन.आई – 70296/98

प्रेषक–

उप निदेशक कृषि (सूचना)

118, पंत कृषि भवन,

जयपुर–302005

प्रेषिति–

बागवानी में पादप नियंत्रकों का उपयोग

बागवानी में हारमोन्स (पादप नियंत्रकों) का बहुत महत्व है। फल वृक्षों में कई बार विकास की वृद्धि दर रूकने, फल व फूल झड़ने एवं वृद्धि कम होने की समस्या आ जाती है। ऐसी स्थिति में कृत्रिम हारमोन्स का उपयोग लाभकारी सिद्ध होता है। पादप नियंत्रक पौषक तत्व नहीं होकर कार्बनिक रसायन होते हैं जिनकी थोड़ी–सी मात्रा ही पौधें की क्रियात्मक वृद्धि के लिए जिम्मेदार होती है। हारमोन्स का उपयोग जड़ों को विकसित करने, कलिकाओं की निष्क्रियता समाप्त करने, वृद्धि जनक, वृद्धि अवरोधक, पुष्पांकन का नियमितिकरण एवं नियंत्रण, बीज रहित फल प्राप्त करने, फूलों एवं फलों को झड़ने से रोकने, नर मादा अनुपात नियंत्रण करने, फलों को पकाने आदि में सहायक होता है।

बागवानी में हारमोन्स (पादप नियन्त्रकों) का उपयोग :

★ आम में मालफॉरमेशन की समस्या को रोकने के लिए नेप्थलीन एसिटिक एसिड़ (एन.ए.ए.) को 200 मिलिग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से इस समस्या की रोकथाम की जा सकती है।

★ नींबू वर्गीय वृक्षों में फल गिरने की समस्या रहती हैं। इसे रोकने के लिए 2–4, डी 10 मिलीग्राम प्रति लीटर पानी (या एक ग्राम दवा 100 लीटर पानी) में घोलकर छिड़काव करना चाहिए। नागपुरी संतरे में परिपक्व फलों को गिरने से बचाने के लिए प्रति लीटर पानी में 200 मिलीग्राम नेप्थलीन एसिटिक एसिड़ (एन.ए.ए.) का छिड़काव करें।

★ अमरूद के वृक्ष पर लगे फूलों पर नेप्थलीन एसिटिक एसिड़ के 600 पी.पी.एम (600 मिलीग्राम एक लीटर पानी में) सान्द्रता वाले घोल का छिड़काव प्रभावी होता है।

★ अंगूर के फलों का आकार बढ़ाने के लिए जिब्रेलिक एसिड़ से आरम्भ में ही गुच्छों का उपचार जरूरी होता है। पूसा सीडलेस किस्म की मंजरियों के 80 प्रतिशत फूलों के खिलने पर जिब्रेलिक एसिड़ 45 मिलीग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से उपज में वृद्धि होती है।

★ फालसा की झाड़ी से प्रायः कम फल मिलते हैं। परन्तु जिब्रेलिक एसिड की 60 मिलीग्राम मात्रा एक लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करने से फलों का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।

★ बेर की गोला किस्म में जिब्रेलिक एसिड़ के 30 मिलीग्राम प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव करने से फल गिरने की समस्या कम होती है।

★ फलदार पौधों को पकाने के लिए इथेफोन 500 पी.पी.एम. (500 मिलीग्राम प्रति लीटर पानी में) घोलकर छिड़काव करें।

★ पौधों की कंटिग में जड़ों के विकास के लिए 500 मिलीग्राम आई.बी.एम. हारमोन का उपयोग करें।

★ कुष्मांड कुल की सब्जियों में मादा फूलों की संख्या बढ़ाने के लिए जिब्रेलिक एसिड़ 10 मिलीग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

★ मेलिक हाइड्रेजाइड़ का उपयोग 2000 पी.पी.एम. (2 ग्राम प्रति लीटर पानी में) भण्डारण में प्याज के अंकुरण को रोकने के लिए किया जाता है। इस दवा का उपयोग प्याज की खुदाई के एक माह पूर्व करें।

★ खजूर के फलों पर डोका अवस्था में 1 ग्राम ईथ्रल एक लीटर पानी के घोल का छिड़काव करने से फलों के आकार व वजन में सुधार होता है।

हारमोन्स (पादप नियन्त्रकों) के उपयोग में सावधानियाँ

★ पादप नियन्त्रकों का उपयोग पूर्ण जानकारी व अनुभव के आधार पर सावधानी से किया जाये अन्यथा असावधानी के कारण तथा निर्धारित मात्रा से अधिक उपयोग करने पर नुकसान दायक भी हो सकता है अतः इसका उपयोग एवं सान्द्रता का घोल विशेषज्ञों की देखरेख में ही किया जाये।

★ सीधे जल में हारमोन की घुलनशीलता कम होती है अतः इसका घोल परिशुद्ध जल या सोडियम हाइड्रोक्साइड विलयन की अल्प मात्रा में घोलने के बाद जल में मिलाना चाहिए।

★ छिड़काव दोपहर में नहीं करके सुबह या सायः काल ही किया जाना चाहिए।

★ कलमों से जड़ों के शीघ्र विकास के लिए आई.बी.एम या आई.ए.ए. रसायन को साधारण पाउडर के साथ मिलाकर सूखी अवस्था में ही कलमों के निचले भाग को उपचारित कर लगाया जाए।

रबी 2013 –14 हेतु प्रमाणित बीज की विक्रय दरें

राजस्थान स्टेट सीड्स कॉर्पोरेशन लि. ने रबी 2013–14 में सामान्य वितरण के लिए प्रमाणित बीजों की विक्रय दरें घोषित की हैं :–

क्र. स.	फसल	किस्म	विक्रय दर (रु. प्रति क्वि.)
1	जौ	पी–एल. 751, बी.एच.–902 व अन्य	1500
		आर.डी.–2660/2592/2715/2624/2503	1600
		आर.डी.–2035/2552/2052	1700
2	गेहूँ	राज–4037	2100
		राज–4120, पी.बी.डब्ल्यू–343/550	2300
		राज–6560/4083,पी.बी.डब्ल्यू–502 एच.डी.–2932 एवं अन्य	2400
		लोक–1	2500
		राज–1482/3077/3765	2600
		सी.–306	3000
3.	सरसों	सभी किस्में	4000
4.	चना	जी.एन.जी. –469/663,दाहोद यलो, आर.एस.जी.–888/44/931, सी.एस.जे.डी.–884	4000
		आर.एस.जी. –902/895/945/896/963/991/973/807,प्रताप सी.1 जी.एन.जी. –1581/1488	3900
5.	तारामीरा	सभी किस्में	3800
6.	जीरा	सभी किस्में	17000
7.	मेथी	सभी किस्में	3500
8.	धनियाँ	सभी किस्में	6500

पृष्ठ 1 का शेष (राज्य स्तरीय ....)

पशुपालन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किये हैं। उन्होंने उम्मीद प्रकट की कि राज्य में कृषि क्षेत्र में किये जा रहे कार्यों की वजह से इस साल भी राजस्थान कृषि उत्पादन में देश में प्रथम रहेगा। कार्यक्रम की शुरूआत में प्रमुख शासन सचिव कृषि डी.बी. गुप्ता ने विभाग की प्रगति की जानकारी प्रस्तुत की।

समारोह में कृषि (तकनीकी शिक्षा) राज्य मंत्री मुरारी लाल मीणा, राज्य बीज निगम के अध्यक्ष धर्मेन्द्र राठौड़, प्रमुख शासन सचिव उद्यानिकी डॉ. दिनेश गोयल, प्रमुख शासन सचिव सार्वजनिक निर्माण विभाग जे.सी. महान्ति, कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपति, उद्यानिकी विभाग आयुक्त श्रीराम मीणा, कृषि प्रबन्ध संस्थान के निदेशक बी.एल. मीणा सहित प्रदेश के विभिन्न जिलों से आये प्रगतिशील किसान एवं गणमान्य जन उपस्थित थे। अन्त में कृषि निदेशक अनिल कुमार चपलोत ने सभी का आभार प्रकट किया।

खेत के निचले हिस्से में टांका या खेत-तलाई बनायें।

स्वत्वाधिकारी कृषि विभाग राजस्थान सरकार के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक निदेशक कृषि, कृषि, विभाग राजस्थान, जयपुर द्वारा कृषि, सूचना मुद्रणालय जयपुर से मुद्रित और पंत कृषि, भवन, जनपथ, जयपुर से प्रकाशित।

प्रकाशक	– अनिल कुमार चपलोत
सम्पादक	– भंवरा राम कड़वा
सह सम्पादक	– पूनम चौधरी
परामर्श	– जे.पी. यादव
डिजाइनर	– आर. मैसी